This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
https://egangotri.wordpress.com/

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

४९६   ५ नं- ९६

॥श्रीशांवंदे॥ सद्गुरु वरगणेश भारती॥ वंदुनि निजमने अति प्रिति॥ वाक्यवृत्ती उग
विन कौतुके॥ ऐका नामन विरे महत्सुखे॥१॥ श्लोक॥ स्थूलो मांसमयो देहो सूक्ष्मस्याद्वा
सनामयः॥ ज्ञानकर्मेंद्रियैः सार्धं धीप्राणो तच्छरीरगो॥१॥ त्वग्मांस रूप पहिजि ननु
हि पाहाहो॥ नो वासनामय दुजा निज सूक्ष्म देहो॥ हे ज्ञान कर्म करणे मिळुनि दाहा हि॥
प्राणा मति सह दुजे ननु मानि पाहि॥१॥ श्लोक॥ अज्ञानं कारण साक्षी बोधस्तेषां विभा
सकः॥ बोधाभासो बुद्धिगतः कर्ता स्यात्पुण्यपापयोः॥२॥ अज्ञान कारण यथा शरी
रहि यासि॥ साक्षि व बोध हरि भासक या तिहिंसि॥ नो बुद्धि सिक व ळुनि बिसरनि

Acc. No. ~~1670~~ M-1694
Title - लघुवाक्यवृत्ति
Author - शिवराम
Date - ?
Sub - वेदान्त
folio - 4
Xerox - 8

K.K.S.U. LIBRARY RAMTEK 441 106 Dist. Nagpur M-1694

Checked 2012

1

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वाक्य आपा ॥ होउनि जीव करि तो मग पुण्यपापा ॥ २ ॥ श्लोक ॥ स एव संसरेत्कर्मवशा वृत्ति
१ ल्लोकद्वयसदा ॥ बोधाभासात्शुध्धबोधविविच्यादितियत्नतः ॥ ३ ॥ आत्मप्रभास्फु
रलिया मति दर्पणेशि ॥ आभास तेथे समके ह्मणो जीव त्याशि ॥ त्यान्सागकान्च
पडला जनि मृत्यु गोवा ॥ आभासहुनि हरि शुध्द मथुनि घ्यावा ॥ ३ ॥ श्लोक ॥ जाग
रस्वप्नयोरेवबोधाभासविडंबना ॥ सुप्तौ तुत्तल्लये बोधः शुद्धो जाड्यंप्रकाशयेत्
जो स्वप्नजागृतिसि सावध बुद्धि आहे ॥ आत्मावभास तव होनदशोसि राहे ॥ १
बुद्धिः सुषुप्तिसि लये तरि भासना हि ॥ नै शुद्धभास वितत्याचि जडाशिपाहि ॥ ४

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लोक॥ जागरेपि धियः तुष्णींभावः शुधेन भासते॥ धीव्यापारांश्चतद्भास्याः
चिदाभासेनसंयुताः॥५॥ हे बुद्धि होति उगलि जरि जागृतीसी॥ शुधः प्रकाश
कतिच्या उगलपणासि॥ व्यापार सर्व मति वाहे रिभासविना॥ आभासयुक्त
मग ते पडताति नाना॥५॥ श्लो०॥ वन्हितप्तजलं तापयुक्तं देहस्य तापकं॥ चि
द्भास्याधीस्तदाभासयुक्तान्यं भासयेत्तथा॥६॥ जैसे से वन्हितापले व अंबु पाहि
त्या तापेसि युक्त देतापदेहि॥ तैसे देवे भासलि बुधिताना॥ आभासेसि भासवि
ते पदार्था॥६॥ श्लो०॥ रूपादिगुणदोषादिविकल्पा बुद्धिगाक्रिया॥ तांक्रियावि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वाक्य पयेसार्धभासयंति चितिर्मता ॥ ७ ॥ शब्दादि पाच विषया प्रतिभासताहे ॥ मा वृत्ति
२ नेन मानति असि मति चिक्रियाहे ॥ त्यात्या क्रियेस विषयासहनि विशेषि ॥ आला
प्रकाशवितसे अपुल्या प्रकाशि ॥ ७ ॥ श्लो० ॥ रूपाद्य गुणदोषाभ्यां विविक्ता केवला
चितिः ॥ सेवानुवर्तते रूपरसादिनां विकल्पने ॥ ८ ॥ रूपादि निर्दोषगुणादिनी हि ॥
जो वेगळा देव असे सबाहि ॥ तो चिरसस्पर्शरूपा विकल्पि ॥ असे अनुश्रुत चि
निर्विकल्पि ॥ ८ ॥ श्लो० ॥ क्षणे क्षणे न्यथा भूता धिविकल्पाश्चितिर्नतु ॥ मुक्तासुसू २
त्रवद्बुद्धिर्विकल्पेषु चिति स्थिता ॥ ९ ॥ क्षणक्षणी बुद्धि अनानत्वा पडे ॥ तियेस

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वे चिन्मयते नपालटे ॥ मोत्यास जैसा गुण वोविला असे ॥ बुद्धि विकल्पात
हरितसावसे ॥ ९ ॥ श्लो० मुक्ताभिरावृतं सूत्रं मुक्तयोर्मध्य इष्यते ॥ तथा मुक्तौ
वृत्तौ विकल्पे स्थित्स्पष्टमध्ये विकल्पयोः ॥ ९ ॥ मुक्तावळिच गुण आवरिला वि
शेषे ॥ मुक्तद्वया निवडिता गुण मध्य भासे ॥ तैसा अनुस्युत हरि गुण वृत्तिमा
जी ॥ वृत्त्यंतरे उदित वृत्ति मधे पाहा जी ॥ १० ॥ श्लो० ॥ नष्टे पूर्व विकल्पे तु यावद
न्यस्य नोदयः ॥ निर्विकल्पकचैतन्यं स्पष्टं तावद्विभासते ॥ ११ ॥ पूर्विल जो म
ति विकल्प निमोनि गेला ॥ जो अन्य वृत्ति गुण हि उदयांत आला ॥ तो निर्वि

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

वाक्य ल्पनहरिजीविचा विसावा॥ चिन्मात्र केवळ असे निवडोनि घ्यावा॥११॥ श्लो० वृत्ति
३ एक द्वित्रि क्षणेष्वेवं विकल्पस्य निरोधनं॥ क्रमेणभ्यसतां यत्नात् ब्रह्मानुभव
कांक्षिभिः॥१२॥ निरोधो करियेक दोत्री क्षणाचा॥ अभावचिहोये विकल्पात
याचा॥ हरिप्राप्तीच्या विआरीआर्तज्यासि॥ तिहि हाचिअभ्यास किजे मना
सि॥१२॥ श्लो०॥ सविकल्पकजीवोयं ब्रह्मस्यानिर्विकल्पकं॥ अहंब्रह्मेति
वाक्येनसोयमर्थोभिधीयते॥१३॥ जोजीव मोहे सविकल्प आहे॥ तोयाच्चबो ३
अ धेशिवरूपहोये॥ वेदीहे ब्रह्म ह्मणोनिवाक्ये॥ मिळोनिये अर्थहि यासिएक॥१३

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

श्लोक ॥ सविकल्पकविघोऽहं ब्रह्मैक निर्विकल्पकं ॥ स्वतः सिद्धा विकल्पास्ते
निरोद्धव्या प्रयत्नतः ॥ १४ ॥ जे जे स्वतः सिद्ध विकल्प येती ॥ निरोधित्या स्वानुभ
व प्रतीति ॥ सर्वे विकल्पात्मक जीव येणे ॥ स्तुति किजे ब्रह्म निधानकेणे ॥ १४ ॥
श्लो० ॥ शाक्यः सर्वनिरोधश्चेत्समाधिर्ज्ञानिनां प्रियं ॥ न दशा कौ क्षणं राध्या श्र
धेया ब्रह्मतात्मनः ॥ १५ ॥ जो शक्ति आहे गुणवृत्तिरोधि ॥ अभ्यास किजे तितु
क्याच आधि ॥ शक्ति नसे सर्व निरोध भावा ॥ क्षणक्षणाभ्यास न रिक्त रावा ॥ १५ ॥
श्लो० ॥ श्रधा स्तु ब्रह्मतां स्वस्य चिंत्यतां बुद्धिवृत्तिभिः ॥ वाक्यवृत्त्या यथा शक्तिः

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

लघुवा० ४

ज्ञात्वाद्यभ्यस्यतां सदा ॥१६॥ ऐसा च जो सर्व विकल्परोधि ॥ त्या योगीया वोळ
गाति समाधि ॥ युक्तिबळे जाणु निवाक्य वृत्ति ॥ आत्मा चि मि निश्चय जे मनि ती ॥१६
श्लो० ॥ तच्चिंतनं तत्कथनं अन्योन्यं तत्प्रबोधनं ॥ एतदेकपरत्वं च ब्रह्माभ्यासं वि
दुर्बुधाः ॥१७॥ ते चि चिंतिते कथी शिष्यलोका ॥ तेणे बोधे बोधिति येकमेका ॥
त्यावाचुनि अन्य कांहि न पाहे ॥ मुख्य ब्रह्माभ्यास तो हा चि आहे ॥१७॥ श्लो०
देहात्मधीवद्ब्रह्मात्मधी दार्ढ्ये कृतकृत्यता ॥ यदा तदा यं म्रियतां मुक्तो सो ना
त्र संशयः ॥१८॥ जैसा अहं देह बुद्धि दृढावो ॥ तैसा जाला पाहिजे ब्रह्मभावो ॥
तो चि लक्षु निर्मान वी देहधारि ॥ त्या लाना हि जन्ममृत्या दिवारि ॥१८॥ हे वाक्यवृत्ति
गुरु शंकर बोलिला हे ॥ जो ये पै वृत्ति पसरुनि सरर्थ पाहे ॥ अभ्यासिलि स्थिति धरोनि

कवृत्ति अखंड राहे ॥ तो जयानी विहरतां
शिवराम आहे ॥१९ श्रीमच्छंकरा
चार्य विरचित लघुवाक्यवृत्तिसमाप्ति

KKSU LIBRARY RAMTEK 441106 M-1694 Dist Nagpur

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection

[OrderDescription]
,CREATED=05.10.20 14:39
,TRANSFERRED=2020/10/05 at 14:41:18
,PAGES=8
,TYPE=STD
,NAME=S0003862
,Book Name=M-1694-LAGHUVAKYAVRITI
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF
,

CC-0. In Public Domain.Kavikulguru Kalidas Sanskrit University Ramtek Collection